(ISSN: 2393-8048)

International Seminar on September 16th, 2024
"Exploring the Frontiers of Interdisciplinary Research (ICEFIR-2024)"
Organized By: Nagpal Charitable Trust, Sri Ganganagar
Venue: Maharaja Agrasen Vidya Mandir School, Sri Ganganagar

हिंदी साहित्य में भाषा शिल्प का अध्ययन

सविता रानी, हिंदी विभाग, श्री वेंकटेश्वर विश्वविद्यालय, गजरौला, अमरोहा (उत्तर प्रदेश) भारत

सारांश

हिंदी साहित्य के विकास में भाषा और शिल्प का अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान रहा है। साहित्यकार अपनी अनुभूतियों, विचारों, संवेदनाओं और सामाजिक सरोकारों को प्रभावशाली ढंग से व्यक्त करने के लिए भाषा तथा विभिन्न शिल्पगत उपकरणों का प्रयोग करता है। प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य हिंदी साहित्य में भाषा-शिल्प की विविध प्रवृत्तियों, विशेषताओं और विकासात्मक स्वरूप का विश्लेषण करना है। हिंदी साहित्य की विभिन्न विधाओं—कविता, कहानी, उपन्यास, नाटक, निबंध और आलोचना—में भाषा के स्वरूप और शिल्प की अभिव्यक्ति अलग-अलग रूपों में दिखाई देती है। साहित्यिक भाषा में तत्सम, तद्भव, देशज, उर्दू तथा लोकभाषा के शब्दों का प्रयोग रचनाकार की अभिव्यक्ति को व्यापक और प्रभावपूर्ण बनाता है। इसी प्रकार बिंब, प्रतीक, रूपक, उपमा, व्यंग्य, मानवीकरण, मुहावरे, लोकोक्तियाँ तथा ध्वन्यात्मकता जैसे शिल्पगत तत्व रचना की सौंदर्यात्मकता और संप्रेषणीयता को बढ़ाते हैं।

आधुनिक हिंदी साहित्य में भाषा-शिल्प ने परंपरागत सीमाओं से आगे बढ़कर बोलचाल, आंचलिकता, जनभाषा और समकालीन सामाजिक अनुभवों को आत्मसात किया है। साहित्यकारों ने समय, समाज और परिवर्तित जीवन-मूल्यों के अनुरूप भाषा में नवीन प्रयोग किए हैं। इस अध्ययन में भाषा की सरलता, सहजता, प्रतीकात्मकता, व्यंजना, शैलीगत विविधता तथा कथ्य और शिल्प के अंतर्संबंधों का विवेचन किया जाएगा। निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि भाषा-शिल्प हिंदी साहित्य की प्रभावशीलता, सौंदर्य और सामाजिक प्रासंगिकता को निर्धारित करने वाला महत्वपूर्ण आधार है।

बीज शब्द: हिंदी साहित्य, भाषा-शिल्प, साहित्यिक भाषा, शैली, अभिव्यक्ति, बिंब, प्रतीक, अलंकार, लोकभाषा, शिल्पगत प्रयोग।

Quality Of Work... Never Ended...